प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

एकात्म मानव दर्शन पर संगोष्ठी में कृषि मंत्री एवं वित्त मंत्री ने दिये व्याख्यान

पंतनगर। ०६ अगस्त २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय के रतन सिंह सभागार में पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं श्री नानाजी देशमुख की जन्म शताब्दी पर चल रही राष्ट्रीय संगोष्ठी 'एकात्म मानव दर्शन का व्यवहारिक स्वरूप : भारत के समेकित विकास के प्रयास' के उपान्तिम सत्र में आज उत्तराखण्ड के कृषि मंत्री, श्री सुबोध उनियाल एवं वित्त मंत्री, श्री प्रकाश पंत, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. जे. कुमार, ने की। इस अवसर पर उत्तरांचल उत्थान परिषद के उपाध्यक्ष, श्री प्रेम बड़ाकोटी, भी मंचासीन थे।

कृषि मंत्री, श्री सुबोध उनियाल ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि दीनदयाल उपाध्याय जी एवं नानाजी देशमुख के एकात्मवाद एवं अंत्योदय को साकार करना अब अधिक सम्भव है क्योंकि देश के चार संवैधानिक पदों पर एक ही पार्टी के लोग आसीन हैं। उन्होंने कहा कि हरित क्रांति की जन्मस्थली पंतनगर में इस गोष्ठी का आयोजन महत्वपूर्ण है। श्री उनियाल ने उत्तराखण्ड में, विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में, खेती एवं किसान की दशा सुधारने के लिए उनके मंत्रालय द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों की जानकारी दी, जिसमें उन्होंने स्वैच्छिक चकबंदी को कानूनी मान्यता दिया जाना, फसल बीमा के लिए पर्वतीय क्षेत्रों में भी न्याय पंचायत को मानक बनाना, गुणवत्तायुक्त पौध किसानों को उपलब्ध कराने के लिए नर्सरी एक्ट, जैविक खेती एक्ट, अटल हर्बल मिशन में ४६ लाख पौध उपलब्ध कराने, बंजर भूमि पर सगंधी फसलों की खेती, जंगली जानवरों से निजात दिलाने के लिए जंगलों में फलदार वृक्षों का रोपण, इत्यादि के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि लोगों के बीच असमानता बढ़ती जा रही है जिसे दूर किये जाने की आवश्यकता है, तभी दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद को प्रासंगिक बनाया जा सकेगा।

वित्त मंत्री, श्री प्रकाश पंत ने एकात्म मानव दर्शन को एकात्मता एवं मानववाद दोनों का योग बताया। उन्होंने चार पुरूषार्थ, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, वाले मानव को ही पूर्ण मानव बताया जो समाज के लिए चिंतन करेगा और ऐसे मानवों से युक्त समाज समिष्टि एवं सृष्टि का चिंतन करेगा। उन्होंने एकात्म मानव दर्शन को भारतीय दर्शन का मूल सिद्धान्त बताते हुए इसे सृष्टि के लिए उत्कृष्ट मानव का निर्माण करने वाला बताया। केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जीएसटी को लागू करने के पीछे भी अर्थ के अभाव को दूर करने का उन्होंने प्रयास बताया।

कुलपति, डा. जे. कुमार, ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि कृषि के विकास के लिए पर्वतीय क्षेत्र के गांवों को सड़क से जोड़ना होगा, औद्यानिक फसलों का उच्च गुणवत्तायुक्त प्रवर्धन सामग्री की उपलब्धता एवं प्रसार कार्यकर्ताओं की किसानों तक पहुंच बढ़ानी होगी। उन्होंने यह भी कहा कि कृषि को लाभकारी एवं अभिनवी बनाकर ही युवाओं को कृषि की ओर आकर्षित किया जाना सम्भव होगा। साथ ही कृषि में बीज प्रतिस्थापन दर बढ़ाने तथा इसको पशुपालन से जोड़ने की भी उन्होंने आवश्यकता बताई। डा. जे. कुमार ने कहा कि वर्तमान में उपलब्ध कृषि तकनीकें यदि किसानों तक पहुंच जायें तो दूसरी हरित क्रांति सम्भव है।

इससे पूर्व सत्र में श्री राजेश थपलियाल ने संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों की समीक्षा कर किसानों की समस्याओं को बताया। प्रगतिशील कृषक, श्री सुधीर चढ्ढा, ने समन्वित ग्रामीण विकास पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया तथा श्री प्रेम बड़ाकोटी एवं डा. नंदिता पाठक ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। डा. एस. के. कश्यप ने सत्र का संचालन किया व इस दिन को दीनदयाल उपाध्याय जी एवं नाना जी देशमुख के प्रति श्रद्धांजलि का दिन बताया। इस सत्र में विभिन्न महाविभूतियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में किसान एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उपान्तिम सत्र में मुख्य अतिथि श्री प्रकाश पंत एवं श्री सुबोध उनियाल को शाल ओढाकर एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित करते अध्यक्ष एवं कुलपति, डा. जे. कुमार।